डॉ.पी.एस.पाटील,
एम.ए.,पीएच.डी.
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविदयालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि, इस लघु-शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर

दिनांक : 9·4·99

डॉ.पी.एस.पाटील,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविदयालय,
कोल्हापुर।

प्रा.डॉ.वाय.बी.धुमाल
एम.ए.,पीएच.डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
वेणुताई चव्हाण कॉलेज, कराड

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि, कु.सोनकर चंदा दीनानाथ ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए "अस्तित्ववाद से प्रभावित हिन्दी उपन्यास : एक मूल्यांकन (अजय की डायरी, अपने-अपने अजनबी, लाल टीन की छत के विशेष संदर्भ में)" शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। कु.सोनकर चंदा दीनानाथ के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध कला-विद्या शाखा [Faculty of Arts] के अंतर्गत हिन्दी विषय से संबंधित उपन्यास साहित्य-विधा में सम्मिविष्ट है।

स्थल : कराड

दिनांक : 9.4.22

डॉ.वाय.बी.धुमाल
शोध-निर्देशक

प्रख्यापन

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थल : बार्शी

दिनांक : 9.4.99

कु.सोनकर चंदा दीनानाथ

शोध-छात्रा

प्राक्कथन

द्वितीय विश्वयुद्ध ने पाश्चात्य जीवन-पद्धति पर जो प्रभाव पडा वह प्रभाव भारतीय जीवन पद्धति पर भी कम-अधिक मात्रा में पड गया। इस विश्वयुद्ध की विध्वंसकारी विभिषिका ने मानवजीवन को अपने अस्तित्व के बारे में सोचने के लिए बाध्य किया। परिणामस्वरूप, विश्व साहित्य के साथ-साथ भारतीय साहित्य में भी अस्तित्ववादी विचारधारा पनप उठी।

अस्तित्ववाद युरोप की एक चिंतनधारा है। इस धारा का मूल स्त्रोत जर्मन दार्शनिक हैडेगर और डेनिश चिंतक कीर्केगार्द हैं। यह साहित्यधारा मानवीजीवन को निरर्थक मानती है। ईश्वर में आस्था नहीं रखती । निरर्थक मानवी जीवन को सार्थक बनाती है। क्षण का महत्व विशद करती है।मानवी स्वातंत्र्य का समर्थन करके मानवी जीवन के जीवित संदर्भ तलाश करती है। जीवन की समस्याओं पर यह धारा चिंतन करती है। मानवजीवन को केन्द्र में रखकर चलती है। यह एक धर्मनिरपेक्ष धारा मानी जाती है।

अस्तित्ववादी साहित्य-धारा का आरंभ मनुष्य की निरूपाय स्थिति से होता है। मृत्यु इस चिंतनधारा की सबसे बड़ी चुनौती है। इस धारा के अंतर्गत नास्तिक अस्तित्ववादी और आस्तिक अस्तित्ववादी नामक दो प्रवाह हैं। आस्तिक अस्तित्ववादी धारा के समर्थक मानवीजीवन को ईश्वर के साथ जोडते हैं। विदेशी चिंतक कीर्केगार्द और जास्पर्स इस धारा के प्रमुख चिंतक माने जाते हैं। इस चिंतनधारा का दूसरा प्रतिनिधी वर्ग नास्तिक तथा निरीश्वरवादी है। इस वर्ग का प्रतिनिधीत्व नीत्शे एवं सार्त्र का है।

यह धारा परंपरागत मूल्यों के प्रति विद्रोह करती है। अस्तित्ववादी लेखक काल्पनिक साहित्य के निर्माण में रूचि नहीं रखतें। दैनदिन मानवीजीवन के संघर्षों से उनका साहित्य आबद्ध है। मानव मुक्ति के ये साहित्यिक पक्षधर होते हैं।

अस्तित्ववादी चिंतनधारा को विश्वसाहित्य में प्रवाहित करने में सोरेन कीर्केगार्द, जास्पर्स, मार्टिन हैडेगर, गैब्रियल मार्शल, जां-पाल सार्त्र, फ्रेंच काफ्का, अल्बर्ट कामू, नीत्शे, दॉस्तोव्हस्की आदि लेखकों का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

इन विदेशी लेखकों की अस्तित्ववादी चिंतनधारा के अनुकूल भारतीय परिवेश में भी सन साठ के बाद, मानवी जीवन और संस्कृति में अनुकूल बदलाव होने लगे। सन 1970 के बाद भारत में औद्योगिकरण को बढ़ावा मिला। महानगरों की ओर रोजी-रोटी के बहाने लोग भीड करने लगे। मानवी जीवन में महानगरीय जीवन की भीडभाड ने तहलका-सा मचा दिया। भीड में खोया आदमी शून्य बनकर

अपने अस्तित्व की तलाश में छटपटाने लगा। मानवी जीवन तनावपूर्ण बनने लगा। पति-पत्नी, माँ-बाप, बाप-बेटे, भाई-भाई, भाई-बहन, माँ-बेटे के बीच के रिश्तों में आत्मकेन्द्रिता के कारण अलगाव की स्थितियों का निर्माण होने लगा। जीवन की निरर्थकता का बोध मानवी जीवन में उभरने लगा। ईश्वर अनीश्वर की विचारधारा भारतीय जनमानस में बढ़ती गयी। भौतिकीकरण की मात्रा में भारतीय जनमानस को बेचैन बनाया। स्वतंत्रता की तीव्र आकांक्षा में वैषम्य की स्थितियों का निर्माण हुआ। द्वंद्वात्मक परिस्थिति नें मानवी जीवन में भ्रमात्मकता को पैदा किया। निराशाजन्य स्थिति के कारण मृत्युबोध के साक्षात्कार पर चिंतन किया जाने लगा। अलगाव की स्थितियों ने अजनबीपन, ऊबकाई, संत्रस्तता, पीडा, अलगाव, अकेलापन, घुटन को जन्म दिया। मानव जीवन में बेचैनी बढ़ी। मानवी स्वास्थ तिरोहित होने लगा। भारतीय समाजजीवन की यह मानसिक और सामाजिक परिस्थिति हिन्दी के प्रबुद्ध और संवेदनशील लेखकों के नजर से नहीं छूटी। परिणामस्वरूप, अस्तित्ववाद से प्रभावित उपन्यासों का निर्माण हिन्दी में शुरू हुआ। इस कार्य में अज्ञेयजी का योगदान अनन्यसाधारण रहा।

सन 1960 के बाद अस्तित्ववाद की प्रवृत्तियों का समावेश भारतीय जनजीवन में होने लगा। द्वितीय महायुद्ध की विभीषिकाओं का योगदान भी इन प्रवृत्तियों के पीछे रहा। इस स्थिति में सन साठ के पश्चात् हिन्दी के डॉ. देवराज उपाध्याय के 'अजय की डायरी', अज्ञेय के 'अपने-अपने अजनबी',निर्मल वर्मा के 'लाल टीन की छत', 'वे दिन', 'एक चिथडा सुख', मोहन राकेश के 'अन्धेरे बन्द कमरें', 'अन्तराल', ' न आनेवाला कल', सुरेश सिन्हा के 'एक और अजनबी', रमेश बक्षी के 'अठारह सुरज के पौधे', लक्ष्मीकान्त वर्मा के 'टेराकोटा', 'एक कटी हुअी जिन्दगी :एक कटा हुआ कागज', राजकमल चौधरी के 'मछली मरी हुअी', महेन्द्र भल्ला के 'एक पति के नोट्स', उषा प्रियंवदा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें', 'रूकोगी नहीं ---राधिका?', ममता कालिया के 'नरक-दर-नरक', सुदर्शन नारंग के 'अपने विरूद्ध' शैलेश मटियानी के 'आकाश कितना अनंत है'आदि उपन्यासों में अस्तित्ववाद से प्रभावित प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं।

मैंने प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध के लिए प्रादेशिक विविधता, मानसिक विविधता, वैचारिक विविधता की दृष्टि से 'अजय की डायरी', 'अपने-अपने अजनबी', 'लाल टीन की छत'नामक तीन उपन्यासों को चुनकर इन तीन उपन्यासों के विशेष संदर्भ में, हिन्दी के अस्तित्ववाद से प्रभावित उपन्यासों

के विशेष संदर्भ में, हिन्दी के अस्तित्ववाद से प्रभावित उपन्यासों का मूल्यांकन किया है। भारतीय संस्कृति और परिवेश में यह अस्तित्ववादी साहित्यदर्शन कहाँ तक सफल हो चुका है, इस पर भी चिंतन किया है।

इस लघु-शोध-प्रबंध को अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने निम्नलिखित अध्यायों में बाँटा है।

प्रथम अध्याय :-

प्रथम अध्याय 'अस्तित्ववाद : स्वरूप एवं परिभाषाएँ' में मैंने अस्तित्ववाद की पृष्ठभूमि, अस्तित्ववाद का स्वरूप, अस्तित्ववाद की परिभाषाएँ, अस्तित्ववाद का दृष्टिकोण एवं अस्तित्ववादी प्रवृत्तियाँ आदि विधाओं पर सोचकर यह स्पष्ट किया है कि अस्तित्ववाद भारत की पृष्ठभूमि पर कैसे उतर गया और भारत में अस्तित्ववाद की प्रवृत्तियों को पनपने के लिए कैसे पृष्ठभूमि मिली। इसमें भारतीय साहित्य पर भी सोचा है।

द्वितीय अध्याय :-

द्वितीय अध्याय ''अस्तित्ववाद से प्रभावित आलोच्य उपन्यासों में समस्याएँ' में अध्ययन के लिए तीन प्रमुख आलोच्य उपन्यास 'अजय की डायरी', 'अपने-अपने अजनबी' और 'लाल टीन की छत' में अस्तित्ववादी समस्याओं में से अस्तित्वरक्षा की समस्या, अकेलेपन की समस्या, जीवन की निरर्थकता की समस्या, ईश्वर-निरीश्वर एवं आस्तिक-नास्तिकता की समस्या, स्वतंत्रता की समस्या, अलगाव की समस्या, अजनबीपन की समस्या, ऊबकाई की समस्या, संत्रास की समस्या आदि समस्याओं का गहराई से चिंतन करके यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि, अस्तित्ववाद से निर्मित समस्याएँ सामाजिकता की अपेक्षा मनुष्य की मानसिकता से ही अधिक मात्रा में उत्पन्न हुअी है।

तृतीय अध्याय :-

तृतीय अध्याय 'अस्तित्ववाद से प्रभावित आलोच्य हिन्दी उपन्यास : एक मूल्यांकन' में हमने डॉ. देवराज उपाधय लिखित 'अजय की डायरी-1960, अज्ञेय लिखित 'अपने-अपने अजनबी-1961 और निर्मल वर्मा के 'लाल टीन की छत' -1974 इन तीन उपन्यासों में स्थित अस्तित्ववाद की अकेलापन, अजनबीपन, अलगाव, स्वतंत्रता की भावना, मृत्युविषयक दृष्टिकोण, मूल्यविघटन विरोधी संघर्ष, नास्तिक एवं अस्तिकता की भावना, जीवन की निरर्थकता एवं सार्थकता का दृष्टिकोण, अस्तित्वरक्षा

के संघर्ष की प्रवृत्ति, आतंक एवं भय, क्षणवाद, संत्रास एवं पीडा की भावना आदि प्रवृत्तियों को तलाश कर इन उपन्यासों का मूल्यांकन किया है। इन उपन्यासों पर पडे अस्तित्ववाद के प्रभाव को स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय :-

चतुर्थ अध्याय ' साठोत्तरी हिन्दी के कई महत्वपूर्ण अस्तित्ववाद से प्रभावित उपन्यासों का प्रवृत्तिगत मूल्यांकन' में मैंने प्रमुख तीन उपन्यासों के अलावा उषा प्रियंवदा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें'-1961 और 'रूकोगी नहीं, ---राधिका?' -1967, मोहन राकेश के 'अन्धेरे बन्द कमरें'-1961 और 'अन्तराल' -1972, निर्मल वर्मा के 'वे दिन'- 1964, और 'एक चिथडा सुख'-1979, राजकमल चौधरी के 'मछली मरी हुई'-1966 और लक्ष्मीकान्त वर्मा के 'टेराकोटा'-1971 इन आठ उपन्यासों में अस्तित्ववादी प्रवृत्तियों पर सोचकर अस्तित्ववाद से ये उपन्यास कहाँ तक प्रभावित हुअे हैं? इस पर चिंतन किया है।

उपसंहार :-

इसमें मैंने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध लिखते समय अध्ययन के दौरान जो निष्कर्ष हाथ आयें उनका समन्वय किया है।

ऋणनिर्देश :-

मैं अपना सौभाग्य प्रकट करती हूँ कि मुझे मेरे आदरणीय एवं श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. यादवराव बाबुराव धुमाल, रीडर एवं अध्यक्ष, वेणुताई चव्हाण कॉलेज, कऱ्हाड के निर्देशन में प्रस्तुत लघुशोधप्रबंध का कार्य करने का सुअवसर मिला। आपके विद्ववत्तापूर्ण निर्देशन के कारण मेरे शोधकार्य के संदर्भ में ज्ञान की वृद्धि तो हुअी ही, साथ में कार्य के दौरान आपके शांत, धीरगंभीर स्वभाव के कारण समय-समय पर मेरा धीरज बँधता गया है। आपका आभार प्रकट करने में सचमुच ही मेरे शब्द असमर्थता महसूस कर रहें हैं। गुरूमाऊली सौ. नयना धुमाल ने भी अपनी स्नेहपूर्ण स्वभाव के कारण शोधकार्य के लिए मेरा धीरज बँधाने में मदद की। उनकी भी मैं तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. पी.एस् . पाटील, आदरणीय डॉ. अर्जुन चव्हाण सर, डॉ. मोरे सर ने भी मुझे मेरे शोधकार्य में अपना अनमोल सहयोग दिया

है। विश्वविद्यालय के ग्रंथालय-प्रमुख एवं अन्य कर्मचारियों का भी आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ, जिन्होंने मेरी समय पर पुस्तकें उपलब्ध कराने में मदद की।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे पूज्य पिताजी श्री. दीनानाथ सोनकर और स्वर्गीय माताजी सौ. अनुसया सोनकर के आशीर्वादों का फल है, जिनकी मैं दिल से आभारी हूँ। मेरी बहनें सौ. वर्षा और सौ. ललिता का भी आभार प्रकट करना मैं यहाँ भूल नहीं सकती, जिनकी प्रेरणा मुझे प्रस्तुत शोधकार्य करने के लिए मेरा धैर्य बढ़ाती रही। मेरी निकटतम सहेली कु. निर्मला लोकरे का मुझे प्रस्तुत शोधकार्य करते समय बहुमोल योगदान मिला है, साथ ही साथ मेरी सहपाठी कु. शहनाझ सय्यद, मंगल सावंत और कु. मंजुषा डाके इनका सहयोग मुझे इस दौरान मिला है, इनकी भी मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का टंकन कार्य करनेवाले श्री. मिलिंद भोसले जी का भी मैं आभार मानती हूँ, जिन्होंने अल्पावधी में तत्परता से टंकनकार्य पूरा कर अपना सहयोग मुझे दिया है।

चंदा दीनानाथ सोनकर
शोध-छात्रा